रविवार, दिनाँक 15-10-2023 को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

**जीवन दा मैंनूं आनन्द आ गया है**

**जदों दा मैं एह शहनशाह पा लिया है**

सजनों जो अभी सुना है वही आपके जीवन का सत्य हो, उसके लिए खुद को समझना है कि क्या आपने इस कार्य के निमित्त जो थोड़े दिन पूर्व सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित शब्द ब्रह्म विचारों को अपनाने के प्रति आत्म-समर्पण किया था, क्या आप उस समर्पण भाव पर मज़बूत हो या नहीं यानि उठत-बैठत, स्वप्न-जाग्रत जो भी क्रिया आपके अन्दर चल रही है, वह संसारी व शारीरिक भाव-स्वभाव अनुसार चल रही है या फिर शास्त्र-विहित वचनों अनुसार चल रही है। इस सन्दर्भ में ज्ञात हो कि अगर आपकी दैनिक दिनचर्या शास्त्र विहित वचनों अनुरूप चल रही है तो मानो कि आपका पुरुषार्थ सफल हो रहा है और आप सजन पुरुष बनने की ओर कदम बढ़ाकर उपकार कमा रहे हो। अब सजनों उपकार के साथ परोपकार भी कमाना है ताकि जो आनन्द आपके जीवन में भर रहा है उसका बोध सबको भी हो और सबका जीवन समरस सुखी व समृद्धशाली बन जाए। यह सजनों परोपकार प्रवृत्ति में ढलकर जगत का उद्धार करने जैसी महत्वपूर्ण बात है। सो आपको केवल बात तक ही सीमित नहीं रहना अपितु इसको अपने जीवन की वास्तविकता बनाना है। जानो इस कार्य में विलम्ब करना अपने जीवन में खुद ही दुःख भरने की बात है जो हम मानते हैं कि किसी को भी अच्छा नहीं लगेगा क्योंकि ऐसा करना अपना जीवन आप बर्बाद करने की बात होगी। अतैव ऐसी गलती मत करना। इस परिप्रेक्ष्य में यदि अब तक आप नहीं सम्भले तो आज आपको दोबारा मौका दिया जा रहा है। इस मौके का लाभ उठकर अपना शुभ करने के प्रति सावधान व सतर्क हो जाना और सुनिश्चित रूप से सफलता

प्राप्त करना। ठीक है जी? आई बात समझ में? इसी सन्दर्भ में अब ध्यान से भजन सुनोः-

**अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।**

**हुण अन्दर बादल कोई नहीं, समझाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**असां सुत्तियां भुलियाँ दासियां नूं, हुण जगाया महाबीर जी प्यारे ने।**

**दासियां जन्म जन्म दियां बिछड़ियां नू, रघुनाथ मिलाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**काम क्रोध लोभ अन्दर कोई नहीं, यह बताया महाबीर जी प्यारे ने।**

**वैर विरोध हैन बाहर भैणों, झगड़ा मुकाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**शब्द सुरति दा सी विछोड़ा भैणों, मेल कराया महाबीर जी प्यारे ने।**

**संसार समुंद्र दे विच भरम रहे, किनारे लाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**मौत दा दिन रात सी भय नी भैणों, हुण बचाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**असां भुलियां होईयां दासियां नूं, राह बताया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**रघुनाथ जी दे चरणां दे विच भैणों, हुण बिठाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**धूप दीप और तिलक भैणां, रघुनाथ जी नूं लवाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**दासी सदके ते कुरबान जावे, अचरज खेल दिखाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

**अज्ञान का बादल जो था पड़ा, हटाया महाबीर जी प्यारे ने।।**

सजनों यह भजन आपने कई बार सुना है। इतनी बार इस भजन को सुनने के पश्चात भी आपके अन्तर्घट से अज्ञान अन्धकार क्यों नहीं सिमटा और आप

आत्मज्ञानी बनने में कामयाब क्यों नहीं हुए? यह एक बहुत ही अजीब बात लगती है। यह नादानी है, कमज़ोरी है और अन्धकार में भ्रमित बुद्धि इन्सान की तरह भटकने की बात है। ऐसा करना अपनी वास्तविकता के विपरीत जीवन-व्यवहार करते हुए दुःख-क्लेश खरीदने जैसी बुरी बात है। यहाँ आपने विचारना है कि इतनी बड़ी गलती कैसे लगातार होती जा रही है यानि आप बाल-अवस्था से युवा-अवस्था में आए, युवा-अवस्था से प्रौढ़-अवस्था में आए और अब प्रौढ़-अवस्था से वृद्ध-अवस्था की ओर बढ़ते जा रहे हो और साथ ही साथ जीवन की हर अवस्था में इस गलती को दोहराते जा रहे हो। जानो ऐसा इसलिए हो रहा है क्योंकि इस संसार में आने के पश्चात जिनसे भी, माता-पिता, भाई-बहिन, मित्र, सगे-सम्बन्धियों के रूप में सम्पर्क हुआ उन्होंने भी परमार्थ के रास्ते की बात कभी नहीं की यानि उन्होंने कभी भी मानव जीवन प्राप्त करने का रहस्य नहीं बताया। नतीजा हम अपने वास्तविक लक्ष्य को, अपनी अजर-अमर अवस्था को नहीं जान पाए और परमपद प्राप्त नहीं कर पाए। आशय यह है कि उन्होंने इस तरह हमारी मन बुद्धि को जगत जँजाल में फँसा दिया कि अब उससे अपने ख़्याल को आज़ाद करना नामुकिन सी बात लगती है। तभी तो कई बार पुरुषार्थ करने के बावज़ूद भी हम संसारियों से हार खा जाते हैं। अतः मानो कि परिवार से लेकर समाज तक हमारे चारों ओर से संसारियों का जो मज़बूत घेरा है वह वास्तविकता से अपरिचित इन्सानों से भरा पड़ा है। इसीलिए जीव बार-बार हार खा रहा है। सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ पास होते हुए यह हार हमें मन्जूर नहीं होनी चाहिए। अभी सम्भलने व सुधरने का वक्त है और जीवन के विजय पथ पर आगे बढ़ते हुए परमपद को प्राप्त कर विश्राम पाने का शुभ अवसर है। यहाँ प्रश्न उठता है कि यह जो विनाशकारी खेल चल रहा है उस खेल से हमारा नुक्सान कैसे हुआ यानि हम दुर्बुद्धि इन्सान कैसे बन गए और संसार ने जो चाहा वह हमारे साथ कर दिया, इस खेल को समझने की आवश्यकता है। युगों से संसारी इन्सान त्रेता से लेकर द्वापर तक, द्वापर से लेकर कलियुग तक संकल्पों-विकल्पों की गर्त में धँसते गए और कोई भी उन्हें इससे उबरने की युक्ति नहीं बता सका। सजनों जानो कि त्रेता से सब इन्सानों के मन में इस संकल्प का उदय हुआ, तभी से ख़्याल यानि

सुरत-शब्द का विछोड़ा आरम्भ हो गया और परस्पर दूरी पनपने लगी। इसके विपरीत जब सुरत उस शब्द के संग बनी रहती है, जहाँ से आत्मिकज्ञान प्राप्त होता है और जहाँ से समस्त शक्ति यानि ब्रह्मसत्ता व प्राणशक्ति प्राप्त होती है तो उसे सब कुछ सतत् प्राप्त होता रहता है। नतीजा उसे आत्मबोध हो जाता है कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ और मेरा इस जीवन में आने का क्या प्रयोजन है? इस तरह इस सत्य से परिचित हो हम सद्बुद्धि इन्सान बन जाते हैं। आशय यह है कि सत्यज्ञान ही सद्बुद्धि होने का आधार होता है और यह ही मन को अखण्ड शान्ति प्रदान करता है। ऐसा होने पर मन जीव का साथी बन जाता है और उससे वही कराता है जो सर्व हितकारी होता है। सर्व हितकारी कृत्य कराकर वह इन्सान के लिए मोक्ष के द्वार खोल देता है। चूंकि हम शब्द के संग नाता जोड़ने के स्थान पर संसार के संग नाता जोड़ने के कारण ऐसा नहीं कर पाए इसीलिए हमारी शारीरिक-मानसिक स्वस्थता नष्ट हो गई और हम तीनों तापों से ग्रस्त हो गए।

इस तथ्य से शिक्षा लेकर सजनों हमें यह समझना है कि जो जीवनदाता होता है, वह कभी भी इन्सान का संग नहीं छोड़ता यानि वह हर क्षण शरीरधारी जीव को प्राणयुक्त रखने के लिए चेतना से भरपूर रखता है। इस सन्दर्भ में जब हमारा शरीर व स्वाभाविक ढाँचा बिगड़ जाता है और हम विषय-विकार ग्रस्त हो जाते हैं तो हमारा शरीर प्राणहीन हो जाता है। निष्कर्षतः जिस शरीर को हम आजीवन पूजते रहते हैं और जिसकी पूजा मानता करते रहते हैं, वह ही हमें एक दिन धोखा दे जाता है। हमारे साथ ऐसा न हो इसलिए सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा हैः-

**ओजी शब्द गुरु मन लवो, अपना आप ही पहचानो।**

**फिर प्रीत उसे नाल बढ़ाओ, ओजी ओ ओजी ओ ध्यान उसे दा लावो।।**

सजनों याद रखो कि शरीर के पास कोई गुण नहीं है। यह तो चमड़ा है, बस चमड़ा। इस चमड़े में उस ईश्वर ने ही प्रकाश डाला है। उस प्रकाश के साथ यदि

हमारी सुरत जुड़ी रहे तो उस प्रवाह से हम प्राणयुक्त रह सकते हैं और ओजस्वी व तेजस्वी नाम कहा सकते हैं। इस तरह हमारे भाव-स्वभाव व बुद्धि निर्मल रहती है और हम उच्च-बुद्धि, उच्च-ख़्याल होकर अपने आलौकिक अस्तित्व में स्थिर बने रहते हैं। ऐसा होने पर जिस कार्य सिद्धि हेतु हमें यह शरीर मिला होता है, हम मानव रूप में उसे सिद्ध कर व अपने समस्त कर्त्तव्यों का समयबद्ध निर्वहन करने में सफल हो जाते हैं और परोपकारी नाम कहाते हैं। यह होता है सजनों ऐक्य भाव में स्थित रहना और सर्व एकात्मा का भानकर आत्मज्ञान प्राप्त करने के योग्य बन जाना। ऐसा होने पर सब दुःखों का कारण वैर-विरोध, द्वि-भाव आदि जड़ से ही समाप्त हो जाते हैं और 'सर्व एकात्मा है', का भाव हृदय में दृढ़ता से स्थित हो जाता है। तब यह समझ आ जाता हैः-

**जो मैं हूँ वो आप हैं, जो आप हैं मैं भी वही हूँ**

ऐसे में कोई भिन्न नजर नहीं आता और हम एक-दूसरे की खुशी पर कुछ भी कुर्बान करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। इस सन्दर्भ में श्री रामचन्द्र जी, श्री कृष्ण जी और दसपातशाह जी का उदाहरण आपके सामने ही है। उन्हें चाहे कितनी ही यातनाएँ सहनी पड़ी पर वे कभी भी धर्म से नहीं हारे। सजनों जब उन्होंने धर्म नहीं हारा तो हम क्षणिक सुखों की वजह से निज-धर्म क्यों हारें? क्या हम जानते नहीं कि हम कितने धनवान हैं? जो सम्पति हमारे पास है, वह तो किसी के पास नहीं। इस सम्पति के होते हम संसार से कुछ प्राप्ति की इच्छा अपने अन्दर क्यों पैदा करें? जब हम सर्व-सम्पन्न हैं तो हम किसी की संसारी शान देखकर उसकी प्राप्ति में क्यों उलझें? हम तो महान हैं, अतः अपनी शान में स्थिरता से बने रहना ही हमें शोभा देता है। सजनों आप भी अपनी आत्मा की अजरता-अमरता की प्राप्ति कर इस शान को प्राप्त होवो। इस हेतु जैसा कि शास्त्र में कहा गया है, उस अनुसार एक तो बैहरुनी अपने घर व शरीर की सफाई नित्य-प्रति करो ताकि शारीरिक व वातावरण की स्वस्थता बनी रहे, दूसरा अन्दरुनी वृत्ति में अपने मन की सफाई रोज करो ताकि जो भी अविचार दिनचर्या के समय मन के अन्दर घुस जाते हैं, रात्रि में सोने से पूर्व उनका सफाया हो जाए। याद रखो अगर रोज

सफाई होती रहती है तो ठीक रहता है अन्यथा अन्दर-बाहर गन्दगी फैल जाती है और उसमें सड़ांध आने लगती है। इस सड़ांध को साफ करना बहुत कठिन हो जाता है। निःसन्देह अगर हम नित्य-प्रति यह क्रिया करते रहते हैं तो सहजता से घर भी सुन्दर और मन भी सुन्दर यानि प्रकाशित बना रहता है। सजनों मन-मन्दिर जब प्रकाशित हो जाता है तो आत्म-साक्षात्कार हो जाता है और हम अपनी वास्तविकता जान जाते हैं कि हम और कुछ नहीं अपितु ब्रह्म ही हैं। यह ब्रह्म ही हमारे सहित सर्व सृष्टि में समाया हुआ है। इस नाते यह विश्व हमारा है और हम इसके मालिक हैं यानि हम अमीरों के अमीर हैं और सब कुछ देने वाले हैं। सत्संग में आने का भी यही मकसद होता है कि समय के साथ-साथ हम स्वयं में स्वाभाविक परिवर्तन ले आएँ। सजनों अगर यह बात समझ आई है तो अपनी सुरत को शब्द गुरु मूल मन्त्र आद् अक्षर के साथ निरन्तर जोड़े रखने का अभ्यास करो और इस साधना द्वारा निष्काम यानि कामनामुक्त हो जाओ। जानो यही एकमात्र युक्ति है निष्कामी बन ब्रह्मज्ञानी बनने की। इसी युक्ति को प्रवानकर ब्रह्मपद को पा सकते हो और तीनों लोकों में अक्षय यश-कीर्ति प्राप्त कर सकते हो। सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के द्वारे पर होने के नाते हमने ऐसा कमाल कर दिखाना है क्योंकि उन्होंने ऐसा कर दिखलाया और अमर हो गए। हम कहते हैं कि इतने ताकतवर होने के बावज़ूद हम मौत के भय से क्यों भ्रमित हैं? मौत के भय से निर्भय होकर हम इस जगत में धर्मसंगत क्यों नहीं विचरते? जानो यदि ऐसा सुनिश्चित कर लेते हो तो अवश्य ही आपके प्राण, शरीर का जो दसवाँ द्वार है, वहाँ से निकलकर सीधे अपने घर जाएँगे और प्रकाश नाल प्रकाश हो विश्राम को पाएँगे। सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के अन्तिम सप्तम सोपान में भी यही व्यक्त किया गया हैः-

**आइये जी आइये प्रकाश हमारा पाइये।।**

**प्रकाश नाल प्रकाश हो जाइये, इलाही सिंगार पहन के।**

**एक रूप हो जाईये, एक रुप हो जाइये।।**

इन पंक्तियों के माध्यम से अपने अन्दर अच्छा परिणाम प्राप्त करने की हिम्मत जगाओ और मज़बूत हो जाओ। अब आगे सुनोः-

**(महाबीर जी के मुख के शब्द)**

**देखो श्री राम जी ओ प्रजा विच वसदा।**

**जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।**

**ओ जित्थे श्री राम दिस्से ओ खिड़ खिड़ हसदा।।**

**जम रहे कई मर रहे कई मरने नूं खड़े तैयार।**

**राम नाम बलधार भजो राम नाम बलधार।।**

**श्री राम जी रमणे वाले हो, रम रहे हो भरपूर।**

**राम नाम नूं याद करने वाला है कोई ज़रूर।**

**हां हां है कोई ज़रूर, वाह वाह है कोई ज़रूर।।**

**कोना कोना डाली डाली, श्री राम है भरपूर।।**

**अनुरागी ते सतवादी दी बन्दगी है ओथे मन्जूर।**

**हां हां है ओथे मन्जूर, वाह वाह है ओथे मन्जूर।।**

**राम जपो राम जपो राम जपने दा वेला।**

**राम जपो जीवन बना लौ, जीवन बनावने दा वेला।**

**हां हां जीवन बनावने दा वेला, वाह वाह जीवन बनावने दा वेला।।**

**श्री राम जी दी रोशनी, रोशनी है ओ कमाल।**

**रोशनी ओ सब कोई वर्ते, कोई विरला परखे ओ यार।**

**हां हां कोई विरला परखे ओ यार, वाह वाह कोई विरला परखे ओ यार।।**

इस कीर्तन के माध्यम से सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ हमें आवाहन दे रहा है कि सर्व-व्यापक भगवान सबके हृदय में बसते हैं। अब जब वह सबके हृदय में बसते हैं तो हम कैसे उनके दर्शन से वंचित रह जाते हैं? हमारे ख़्याल का सम्पर्क उनके साथ क्योंकर नहीं सधता? इस सन्दर्भ में जानो कि यदि हम अपने में जो निवास करता है, उस परमात्मा के प्रति निर्मल प्रेम रखते हैं और उनके दर्शनों की प्रबल चाहना अपने मन में रखते हुए उसे अपने जीवन में उतारने का दृढ़-संकल्प रखते हैं तो निश्चित रूप से हमारा काम बन सकता है। इस हेतु इस द्वारे की जो युक्ति है उस युक्ति का वर्त-वर्ताव अफुरता से करने की हमें आदत डालनी है और ए विध् उस युक्ति को अपने स्वभाव के अन्तर्गत करना है। अब जानो वह युक्ति है - 'ख़्याल ध्यान वल व ध्यान प्रकाश वल रखो'। ऐसा करने से, जो हृदय में रम रहा है, उस आत्मस्वरूप का दर्शन हो जाएगा। उस दर्शन में जब हमारा ख़्याल-ध्यान स्थित होने लग गया तो हम दर्शन नाल दर्शन हो जाएँगे। इस तरह एक दर्शन हो गए तो जो कमाल युग-पुरुषों ने कर दिखलाया, वह त्याग, समर्पण और धर्म के निमित्त अपना सब कुछ निछावर करने की समर्थता हम में भी आ जाएगी। फिर हम कदाचित धर्म नहीं हारेंगे और ईश्वर सम शक्तिशाली हो जाएँगे। यह होगी आत्म-निर्भरता। इस आत्म-निर्भरता के बलबूते पर हम आत्म-विश्वास के साथ इस जगत में सब कुछ करते हुए भी उससे निर्लिप्त अवस्था में समरस बने रहने के योग्य बन जाएँगे। जानो यही तो है निर्विकारी अवस्था। इस अवस्था में इन्सान सतवादी बन एकता, एक-अवस्था में आ जाता है। फिर उसे मान-अपमान, अमीरी-गरीबी, वड-छोट नहीं खलता। इस तरह बाल-अवस्था के समस्त भक्ति भावों से ऊपर उठकर युवा-अवस्था का भक्ति भाव यानि समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपनाना उसे प्रिय लगता है। इस भक्ति भाव को अपनाकर वह जान जाता है कि ईश्वर सर्व-व्यापी है यानि वही तुझमें, मुझमें, सर्व-ब्रह्माण्ड में समाया हुआ है। अब

ध्यान कक्ष में भी इस विषय पर क्लासें लगने लगी हैं ताकि आप गहराई से अपनी व इस ब्रह्माण्ड की यथार्थता समझ जाओ और बाद में कोई गिला-शिकवा न रहे कि अगर किसी ने हमें समझाया होता तो हम अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पा जाते। चलो अब आगे सुनोः-

**(महाबीर जी के मुख के शब्द)**

**दोहाः-**

**श्री राम जी दी मूरती वस्से, श्री राम वस्से हर कोल।**

**मूरती कोई विरला अन्दर लवे टोल।।**

**साजन जी जल्दी जाना है दरबार।**

**ओ हकलाँ मारन तरह तरह दियां, श्री राम जी रहे ने पुकार।।**

**(श्री रामचन्द्र जी कह रहे हैं)**

**मूरती लगे प्यारी, साजन तेरी मूरती, युग युग जगदी आवे साजन तेरी मूरती।**

**कई कई नाम धराये साजन तेरी मूरती।।**

**साजन जी आये करूं असां वारना, क्या क्या असां वारूं।**

**कई नाम ते रहे हैं चितार, साजन तेरी मूरती।।**

**आद मूरती जुगादि मूरती, सारी विश्व विच सुहावे साजन तेरी मूरती।**

**मूरती ओ जुग जुगन्तर मूरती ओ देश देशान्तर।।**

**ओ हर अन्दर हर्षाये, साजन तेरी मूरती।**

**मूरती है ओ मन मन्दिर, ओ है मकान अन्दर।।**

**निर्लेप जगत ते राहवे साजन तेरी मूरती।**

**त्रेते विच श्री राम पधारे द्वापर आये कृष्ण प्यारे।।**

**कलुकाल विच आये दस पातशाह सारे।**

**आये दस पातशाह सारे, साजन तेरी मूरती।।**

**ज्यों ज्यों भीड़ पड़ी भक्तों पर, त्यों त्यों बोझ उतारे, साजन तेरी मूरती।**

**ज्यों विपत्ति पड़ी जग अन्दर, त्यों त्यों कष्ट निवारे, साजन तेरी मूरती।।**

सजनों इतना समझाने के बाद भी अगर आप हारोगे तो यह आपकी अपनी कमज़ोरी होगी। समझदारी इसी में है कि आज से कुछ सप्ताह पूर्व जब शीश अर्पण की बात हुई, तब से लेकर अब तक की सारे सत्संग व ध्यान कक्ष की बातचीत को कड़ी की तरह समझते हुए अपने जीवन में उतारने से मत सकुचाओ। जानो यह विजय-मन्त्र है। अब विजय-मन्त्र को प्राप्त करने के पश्चात अपनी किस्मत सँवारना या बिगाड़ना यानि समझदार बन अपनी किस्मत का ताला आप खोलना या फिर कामयुक्त अवस्था में/फुरनों मे जकड़े रहना व चौरासी लाख योनियों की यातनाएँ भुगतना यह आपके अपने हाथ में है। समय तो चाहता है कि अपना जीवन बनाओ और विश्राम को पा जाओ परन्तु ऐसा करना आपके अपने हाथ में है। इस सन्दर्भ में हम तो यही कहेंगे कि अपने अन्दर उत्साह वर्द्धन करो और युग-परिवर्तन का सन्देश आप समझते हुए सब तक पहुँचाओ। इस तरह अपना कर्त्तव्य सहर्ष निभाते हुए ईश्वर के कर्त्तव्यपरायण सुपुत्र बन जाओ।

आप ऐसा करने में कामयाब हों, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।